

# हमारे आधिकार





सभी को नमस्ते। मेरा नाम आशा है,  
मैं भारत के एक गाँव में रहती हूँ।



क्या आप लोग हमारे जीवन से  
सम्बन्धित कहानियों के बारे में  
बात करने में मेरा साथ देंगे?



मैं एक शिक्षक हूँ - मुझे गाँव के बच्चों को पढ़ाना बहुत  
पसंद है। मैं अपने विद्यार्थियों को बताती हूँ कि हम  
सबकी अपनी अलग कहानी होती है। हम सबके  
जीवन के अनुभव बहुत अलग होते हैं, चाहे हम एक ही  
परिवार, एक ही जाति या एक ही गाँव से क्यों ना हों।



जीवन के कुछ ऐसे पहलू हैं, जो कि जिंदगी को पूरी क्षमता से  
जीने के लिए ज़रूरी हैं; जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य, समानता और  
हिंसा मुक्त जीवन। ये सभी मुद्दे आपस में जुड़े हुए हैं।



शिक्षा शायद इन सभी की नींव है।  
शिक्षा से व्यक्ति को जीवन में उन्नति  
करने के अधिक अवसर मिलते हैं-  
में भी इसी कारण से शिक्षक बनने  
का लक्ष्य पूरा कर पायी।

प्राथमिक विद्यालय



मगर, केवल शिक्षा ही हमें अपने जीवन पर अधिक  
नियंत्रण रखने में सक्षम नहीं बनाती है। हमारा  
स्वास्थ्य भी बहुत महत्वपूर्ण है। अच्छा स्वास्थ्य होने व  
ज़रूरी सेवाओं के मिलने से ही हम ठीक से काम कर  
सकते हैं, सीख सकते हैं, और जीवन जी सकते हैं।

आंगनवाड़ी  
सेन्टर



शिक्षा ने मेरा आत्मविश्वास बढ़ाया है  
और मुझे आत्मनिर्भर बनाया है। सभी  
बड़े और छोटे मुद्दों पर अब मेरी राय  
का सम्मान किया जाता है।





हम अपने बच्चों से लड़का या लड़की होने के कारण, या लोगों की जाति के आधार पर उनसे असमान व्यवहार नहीं कर सकते।



और हिंसा मुक्त जीवन का अर्थ है कि हम अपने घर पर खुश और सुरक्षित रह सकें।



ये कुछ अधिकारों के उदाहरण हैं जो कि मानव होने के नाते हमें मिलते हैं। जैसा कि आप जानते हैं, यह हर किसी को आसानी से नहीं मिलते हैं। कुछ लोगों के पास थोड़े-बहुत अधिकार हैं और कुछ लोग इन से बिलकुल ही वंचित हैं।



भारतीय संविधान का अनुच्छेद 21वां; अनुच्छेद 14/15 वां; मानवाधिकार संरक्षण अधिनियम 1993, मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा

आपने शायद इन मानव अधिकारों के बारे में सुना होगा, लेकिन क्या आप जानते हैं कि भारत सरकार ने राष्ट्रीय कानूनों व अंतरराष्ट्रीय घोषणाओं पर हस्ताक्षर करके इन अधिकारों की सुरक्षा का वादा किया है?



बहुत बार हमें अपने घरों में भी अपने अधिकारों के लिए लड़ना पड़ता है। हमारे अधिकारों की सुरक्षा के लिए बढ़ाया गया हर कदम, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, एक सकारात्मक बदलाव ला सकता है।

इस के अलावा, पिछले कुछ सालों में मैंने हमारे कई भाई-बहनो की अन्याय के खिलाफ लड़ने की कहानियाँ सुनी हैं।





समूह बनाकर मुद्दों पर लगातार चर्चा करना सब के लिए एक अच्छी शुरुआत है। इससे हमें समझ आता है कि हमारी समस्याएँ केवल हमारी नहीं हैं और इन्हें एक साथ मिलकर, समुदाय के स्तर पर हल करने से सबको मदद मिलती है।



ऐसे कई तरीके हैं, जिनसे हम अपने मानवाधिकारों की सुरक्षा कर सकते हैं— चाहे वे कानून के माध्यम से हों, या समूह बना कर, या छोटे-छोटे तरीकों से अपने जीवन की बागडोर अपने हाथ में ले कर।

शायद सबसे महत्वपूर्ण है कि हम अपने अधिकारों के बारे में बातचीत शुरू करें। यह दुनिया में बदलाव लाने के लिए पहला कदम हो सकता है। तो आप सब, कब और कैसे ऐसी बातचीत शुरू करने वाले हैं?

